there had been a little trial at our end to see that our feelings are expressed.

PROF. CHANDRESH P. THAKUR (Bihar): Madam, I would like to associate with the sentiments made by the Leader of the Opposition and I particularly like to mention the helpful contribution of the Minister for Parliamentary Affairs and the Leader of the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Chair is thankful to the Members and the Government and everybody for their cooperation.

Now, can we go ahead with the special mentions? Or shall we go ahead with the Punjab Proclamation because that is timebound?

SOME HON. MEMBERS: Punjab.

THE DEPUTY CHAIRMAN: If the House so agrees, we will take up Punjab. Please let him peacefully make his speech.

STATUTORY RESOLUTION ON PRESIDENT'S PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 IN RELATION TO PUNJAB

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI SUBODH KANT SAHAY): Madam, I beg to move the following Resolution:

> "That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 11th May, 1987, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Punjab, for a further period of six months with effect from the 11th May, 1990."

As the House is aware, in view of the then prevailing situation in Punjab, Proclamation under Article 356 of the Constitution, in relation to the State of Punjab, was issued on May 11, 1987 on the recommendation of the Governor. The Proclamation was approved by the Lok Sabha as well as the Rajya Sabha on 12.5.1987. The Legislative Assembly of the State, which was initially kept under suspended animation, was dissolved on 6th March, 1988, on the recommendation of the Governor.

As the law and order situation in the State continued to be disturbed, approval of both the Houses of Parliament was obtained for continuance of President's rule after every six-monthly period with effect from 11.11.1987, 11.5.1988, 11.11.1988, 11.5.1989 and 11.11.1989. The current spell of President's rule in Punjab is due to expire on 10.5.1990.

The Governor of Punjab, in his recent report to the President, has stated that at an all-party meeting convened by him at Chandigarh in the middle of March, 1990, the view taken was that congenial conditions should be created first before holding elections to the State Legislative Assembly. The Governor shares their views. He is also of the opinion that efforts must be made to mobilise public opinion to bring normalcy in the State. Once these matters are attended to, the State can go for elections in a more harmonious atmosphere conducive to free and fair elections. The Governor has accordingly recommended extension of President's rule in Punjab by bringing in necessary amendments to the Constitution. Accordingly, clauses (4) and (5) of Article 356 of the Constitution have been amended by the Constitution (Sixty-fourth Amendment) Act, 1990. With this enactment, President's Proclamation in relation to the State of Punjab can now be extended for a total period of three years and six months, that is, for a further period of six months with effect from 11.5.1990.

Keeping in view the situation prevailing in the State and taking all the relevant factors into consideration, it is proposed that President's rule in Punjab may be continued for a further period of six months with effect from 11.5.1990.

In view of the position explained by

[Shri Subodh Kant Sahay]

me; I solicit the approval of this august House to the Resolution mentioned by me at the beginning.

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is one amendment by Shri Subramanian Swamy. The Member may move the amendment at this stage without any speech.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): Madam, I beg to move:

That after the said Resolution, the following be added, namely:—

"That the House further resolves that the elections to the Punjab Assembly be held before August 15, 1990."

The questions were proposed.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Statutory Resolution and the amendment are now open for discussion. Now I have a suggestion to make to the Members before I go ahead that we have only one hour. At 6 O'Clock, we generally adjourn... *(Interruptions)*... I am only trying to put a restraint that we have to finish within the specified time. We are going to cut down the number of Special Mentions because of the urgency of the Punjab Resolution. I request the Leaders of the Parties to cut down their speeches and I also request the Members to reduce their speeches and make them as short as possible.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (मध्य प्रदेश): थोड़ा और बढ़ जाना चाहिए।

उपसभापतिः थोड़ा-बहुत बढ़ा लेंगे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः अब कांग्रेस के मेम्बरों को तो बोलने की जरूरत नहीं है।

श्री पी० शिव शंकर (गुजरात): क्यों?

श्री अटल बिहारी वाजपेयीः आज दिनभर बोले हैं।

उपसभापतिः श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल (पंजाब): मुझे एक घंटा बोलना है?

उपसभापतिः आप सारी रात बोलिए, लेकिन प्रोमिज करिए कि हाउस की अटेंडेंस पूरी रहेगी।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपालः आप ने कहा कि एक घंटा मैं बोल देता हूं और मंत्री जी जवाब दे देंगे।

उपसभापतिः आपके और मंत्री महोदय के बीच में मैं पड़ना नहीं चाहती।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपालः जैसा आप कहें?

उपसभापतिः दस मिनट बोल लीजिए। इस में क्या दिक्कत है।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपालः डिप्टी चैयरमेन महोदया, मंत्री जी को कहिए कि ध्यान मेरी तरफ करलें।

उपसभापतिः आज तो पूरे समय मंत्री जी का ध्यान आपकी ही तरफ था। मंत्री जी कृपया ध्यान कर लीजिए।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपालः डिप्टी चैयरमेन महोदया, आज पंजाब में प्रेसीडेंट रूल एक्सटेंड करने के लिए मंत्री महोदय मोशन लाए हैं। वह दिन बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण था पंजाब के लिए जिस दिन पंजाब में प्रेसीडेंट रूल लगाया गया। जब 64 या 65वां एमेंडमेंट ये हाउस के अंदर लाए... मैं तब बोलूंगा...

उपसभापतिः आप मंत्रीजी की ओर ध्यान लगाइए। मुझे दूसरे भी काम होते हैं। आप बोलिए, मैं सुन रही हूं। समय मत नष्ट कीजिए।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपालः जब 63वां एमेंडमेंट हाउस के अंदर लाए थे, उस वक्त भी हमारी पार्टी ने इसका सहयोग और समर्थन किया था और उस एमेंडमेंट को लागू करवाया ताकि 6 महीने के लिए पंजाब में और प्रेसीडेंट रूल लागू हो जाए। मैंने और मेरे कुछ साथियों ने, गवर्नमेंट की साइड के भी कुछ साथियों ने — श्री राम जेठमलानी जी ने, जनरल अरोड़ा और मिस्टर अहलुवालिया ने उस वक्त भी इस को अपोज किया। लेकिन पार्टी की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए हम लोगों ने इस को पास कर दिया कि चलो पंजाब के अंदर 6 महीने के लिए और प्रेसीडेंट रूल एक्सटेंड कर दिया जाए। लेकिन हम लोगों को इससे बहुत बड़ी तकलीफ थी। हमें यह समझ में नहीं आ रहा था कि पंजाब के बारे में इस नयी सरकार की, वी०पी० सिंह सरकार की पालिसी क्या है? न हमें तब इस बात की समझ आ रही थी और न आज समझ में आ रहा है कि वह पंजाब के बारे में क्या करना चाहते हैं? जब इलेक्शन हुए तो

इलेक्शन के दौरान और मेनीफेस्टो में भी उन्होंने यह कहा कि, "पंजाब विल बी आन टाप प्रायरिटी।" आज की हालत यह है कि प्रायरिटी पर छोड़कर मुझे ऐसा लगता है कि पंजाब उनकी किसी गिनती में नहीं कि उसका भी हल करना है, वह और कामों में ऐसे उलझे हुए हैं। इस बात की फरदर डिटेल में न जाते हुए, मैं मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा स्पेसिफिकली कि आप किन हालात में पंजाब में इलेक्शन करवाएंगे? आप कहते हैं कि अगले 6 महीने में पंजाब में इलेक्शन जरूर करवा दिए जायंगे। मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या आप पंजाब में उस दिन का इंतजार कर रहे हैं कि जब पंजाब में नो किलिंग या ज़ीरो किलिंग होगी? यदि ऐसा है तो आप भूल में हैं । जब से आप सत्ता में आए हैं, तब से गिनती बढ़कर, जो पहले 5 या 10 की होती थी, अब 20-25 लोग रोज मरते हैं और इस सरकार के कान के ऊपर कोई जूं तक नहीं सरकती। तो अगर आप यह चाहें कि अगले 6 महीने में आप ऐसी हालत पैदा कर लेंगे जिससे वहां पर ज़ीरो किलिंग हो जाएगी या नो किलिंग हो जाएगी, तो आप बहुत बड़ी भूल में हैं। आपको चाहिए यह कि जितनी जल्दी से जल्दी, यह मेरे निजी विचार हैं, मैं नहीं कहता कि मेरी पूरी पार्टी इससे सहमत है या नहीं, यह मेरे निजी विचार हैं कि आप पंजाब के अंदर जितनी जल्दी से जल्दी इलेक्शन करवा देंगे असेम्बली के, उतनी जल्दी पंजाब की समस्या हल हो सकती है।

[उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते) पीठासीन हुए]

पंजाब के अंदर बहुत सख्ती करके देखी जा चुकी है। आप भी सख्ती कर रहे हैं। उस सख्ती से नतीजा यह हो रहा है कि जो लड़के वहां पर, जिनके ऊपर यह आरोप लगाया जाता है कि वे लड़के वहां पर किलिंग कर रहे हैं, लूटमार कर रहे हैं, उन लड़कों के पास और कोई रास्ता नहीं है कि वे पंजाब छोड़कर, बार्डर क्रास करके पाकिस्तान चले जाएं। आप यह मानते हैं, आपकी सरकार यह मानती है कि पंजाब और जम्मू-कश्मीर के लड़के पाकिस्तान में ट्रेनिंग लेते हैं। जब आप यह मानते हैं तो इससे पहले इसका भी ध्यान रखिए कि वे लड़के पंजाब से पाकिस्तान में जाते क्यों हैं और कैसे जाते हैं? मैं आपको एक-दो छोटी-छोटी मिसालें दे दूं, मेरे कहने का मतलब यह बिल्कुल नहीं कि सारी की सारी पुलिस वहां पर करप्ट है या खराब है, लेकिन पुलिस के अंदर, एडमिनिस्ट्रेशन के अंदर ब्लैकशीप हैं। उन लड़कों के नाम से बैंक्स और दूसरी जगह लूटी जाती हैं, रेप्स होते हैं, करप्शन होती है। एक मिसाल देता हूं। किसी इन्डस्ट्रियलिस्ट के घर में जाकर, जिसकी पंजाब के अंदर एक स्टील मिल थी, कुछ लोगों ने कहा कि आप 20 लाख रूपया दे दीजिए — इन्हीं दिनों की बात है, पिछले दो हफ्तों की बात है — नहीं तो आपको मार दिया जाएगा। लोगों ने उसको कहा कि आप पुलिस में जाकर रिपोर्ट कराएं। उसने कहा कि पुलिस में रिपोर्ट कराने का कोई फायदा नहीं होगा, मैं तो यहां से वाइंड अप करके चला जाऊंगा। लेकिन लोगों के कहने पर जब वह पुलिस स्टेशन रिपोर्ट करने के लिए गया तो जो आफिसर वहां कुर्सी पर बैठा हुआ था, उसको देखकर वह भागकर लौट आया और उसने आकर अपने दोस्तों को बताया कि यही तो वह आदमी था, जो मेरे पास आया था 20 लाख रुपया मांगने के लिए। आई डोन्ट मीन कि सारी पुलिस ऐसी है, मेरे कहने का बिल्कुल तात्पर्य यह नहीं है कि पुलिस वहां पर ऐसा काम कर रही है, लेकिन पुलिस के अंदर भी ब्लैकशीप हैं। करप्शन इतनी हद तक बढ़ गई है कि लोगों का वहां पर जीना हराम हो गया है। ...**(व्यवधान)**...

एक माननीय सदस्य: पहले ब्लैक कैट थे, अब ब्लैकशीप आ गए हैं।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: पहले ब्लैक कैट होंगे, ठीक है, मानता हूं, लेकिन अब ब्लैकशीप आ गए हैं। इसलिए अगर आप यह चाहें कि सारी ऐडमिनिस्ट्रेशन में से, पुलिस में से हम उन्हें निकाल देंगे तो यह मुमकिन नहीं है, आप बहुत बड़ी भूल में हैं। अगर आप ऐसे ही सोचते रहे कि 4-5 महीने में ठीक करके बाद में इलेक्शन करवा देंगे, तो समय निकल जाएगा, उस समय आपके पास और कोई रास्ता नहीं होगा, दुबारा इस हाऊस में आपको आना पड़ेगा 6 महीने की फरदर एक्सटैंशन के लिए।

दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी हिन्दुस्तान है। मान से मैं किसी बात पर सहमत नहीं हूं। मान की मैं किसी बात का समर्थन नहीं करता सिवाय इसके कि वह कहता है कि मेरा यह आरोप है सरकार के ऊपर, यह वही मान है, जिसको नई सरकार ने जब ताकत में आई तो सिर पर चढ़ाया, उसकी ऐस्पीरेशन इतनी हाई कर दी कि पता नहीं क्या हो जाएगा। जब अमृतसर में गए तो राजा साहब कहकर उन्होंने प्रधान मंत्री से ऐसे बातें की जैसे कि बहुत पुराने मित्र होते हैं। उसने यह भी उस वक्त डाइवल्ज किया, उस वक्त उसने यह बताया कि राजा साहब ने मुझे भागलपुर जेल में संदेशा भेजा था कि आपके साथ जो कुछ हो रहा है, मैं उससे सहमत नहीं

[श्री हरवन्द्र सिंह हंसपाल]

हूं। ऐसा मालूम होता है कि वह बहुत क्लोज़ लिंक्स बनाने की कोशिश कर रहा था। इधर से भी उसके लिए बातें की जा रही थीं। लेकिन वही मान आज जो आरोप लगा रहा है, आउट ऑफ फ्रस्ट्रेशन लगा रहा है। आपने उसको बहुत सी होप्स दिलवाई और आज उन्हें पूरा नहीं कर रहे हैं। उसकी जिस बात से मैं सहमत हूं वह यह है कि वह यह आरोप लगाता है कि यह सरकार पंजाब के साथ धोखा कर रही है, पंजाब में इलेक्शन न करवाकर। मैं उसकी इस बात से पूरी तरह सहमत हूं। इससे लोगों के पास, खासकर पंजाब में रहने वाले सिखों के पास यह मैसेज पहुंचता है कि दिल्ली की सरकार पंजाब के सिखों को डैमोक्रेटिक राइट्स नहीं देना चाहती।

आप इस भूल में न रहिए कि सारे सिख मान के साथ हैं। यह बात आप समझिए कि सारे सिख अकाली नहीं हैं, कई अकाली दल हैं। बाकी सिख जो हैं वह सारे मान के साथ नहीं हैं लेकिन जब मान ऐसी बातें करता है कि देख लो वह सरकार, वह प्रधानमंत्री जिसने यह आश्वासन दिया, आज वह प्रधानमंत्री भी उन्हीं लाइन्स पर चल रहे है जिससे पंजाब के अंदर इलेक्शन न हो सकें, यह बहुत गलत मैसेज सिखों के पास जाता है। इससे लोगों के मन के अंदर एक घृणा की भावना पैदा होती है, देश के प्रति और सरकार के प्रति।

मैं बहुत लंबी बात तो नहीं कह सकता लेकिन यह कहूंगा कि दिस इज दि बैस्ट टाइम। आप जितनी जल्दी से जल्दी हो सके पंजाब के अंदर इलेक्शन करवाइए।

महोदय, मैं एक-दो बातें और कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा। बार-बार यह कहा जाता है कि पंजाब के अंदर कम्युनल रॉयट्स नहीं हुए, बावजूद बहुत इंस्टिगेशन के, बहुत उकसावे के। इसमें न तो पहली सरकार का रोल था, न पहली सरकार क्रेडिट ले सकती थी और न आज की सरकार क्रेडिट ले सकती है। यह लोगों के पुराने संबंध हैं, जिनकी वजह से वहां पर कम्युनल रॉयट्स नहीं होते लेकिन इसमें एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो फैक्ट ऑन दि ग्राउंड है, यह बात सही है कि लोगों के संबंध बड़े घनिष्ठ हैं, पुराने हैं, वह टूट नहीं सकते। लेकिन पंजाब के अंदर कुछ एरिया ऐसा है जहां पर बहुत से गांवों में, सैकड़ों, हजारों गांवों में कोई हिन्दू आज की तारीख में नहीं रह रहा है तो वहां कम्युनल रॉयट्स कैसे हो सकते हैं? शहरों के अंदर जो हिंदू लोग रहते हैं, वहां पर भी वह इकट्ठे रहते हैं। उन्होंने अपनी व्यवस्था बनाई हुई है ताकि उनके ऊपर कोई अटैक न कर सके। वह वहां के एडमिनिस्ट्रेशन के ऊपर, वहां की पुलिस के ऊपर, वहां की पैरा-मिलिट्री फोर्सेज के ऊपर बिल्कुल निर्भर नहीं रहते। यही कारण है कि वहां पर कम्युनल रॉयट्स नहीं होते।

मैं मंत्री महोदय से आपके माध्यम से खास तौर पर यह जानना चाहूंगा कि क्या आप तभी कोई ऐक्शन लेंगे जब वहां पर कम्युनल रॉयट्स हो जाएंगे? पाकिस्तान इस बात के ऊपर अड़ा है। पाकिस्तान हर किस्म की मदद पहुंचा रहा है, मैं यह सरकार को बताऊं तो अच्छा नहीं लगता क्योंकि आपके पास सारी रिपोर्ट है। वह उनको पैसा, हथियार, ट्रेनिंग देकर मदद कर रहा है। यहां तक कि लोग भी भेजे जाते हैं। लोग कैसे भेजे जाते हैं? दरअसल पाकिस्तान में रहने वाले लोग हम हिंदुस्तान के लोगों से अच्छी पंजाबी बोलते हैं। उनको ट्रेनिंग देकर, दाढ़ी रखवाकर, सिर पर पगड़ी बंधवाकर यहां भेज देते हैं। यहां पर जब वह ऐक्शन लेते हैं तो उस वक्त यह पता लगता है कि आंतकवादी लड़के यह काम कर रहे हैं। पाकिस्तान बैन्ट अपॉन है। जो कुछ कश्मीर में हो रहा है, वह बहुत आगे निकल गया है। इससे पहले भी मैं कई दफा इस सदन में यह कह चुका हूं, तीन-चार साल से कहता आ रहा हूं कि पाकिस्तान हर तरह से मदद कर रहा है। हमें वहां पर उसके विरुद्ध कोई न कोई ऐक्शन लेना चाहिए।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं ऐक्सटैंशन को समर्थन तो नहीं देना चाहता लेकिन कोई और रास्ता न होने की वजह से उसे समर्थन देता हूं। धन्यवाद।

SHRI RAM JETHMALANI (Karnataka): Mr. Vice-Chairman, Sir, it is a paradox of public life and parliamentary life that though I hate the situation in which this Resolution has become necessary for this House, yet I have to support the formal passing of this Resolution. I wish the situation had not arisen in which the House would have to do this, but without creating legal and constitutional chaos we cannot possibly do without supporting the measure that has been brought up today. But, Sir, this occasion is not to be treated by the Government as some idle formality to be go over as quickly as possible. I think it is an occasion for some assessment and some introspection and some formulation of a sensible policy which must be a

policy other than the present policy of drift which is going on in Punjab.

Sir, speaking for myself, I think the Government can really be convicted of one great failure, and that failure is that its public relations and its publicity machine have been terribly defective. The Government has done a few significant things in Punjab which, unfortunately, have not been brought to the notice of the people of Punjab, and that is why the psyche of the people of Punjab continues to be ruffled and has not to any significant extent been soothed.

Now, Sir, I wish to put before this House the very significant number of measures which the Government has taken, and I wish that every Member of this Hosue should take it upon himself to bring it to the notice of the people of Punjab that this Government is at least serious about solving this problem. Sir, these steps have been taken in spite of the fact that in some sense Kashmir has foreshadowed Punjab. Fortunately, Sir, Punjab has a very strong tradition of commitment to the country's good and to sacrifice for the country's cause, and I don't think that the punjab situation will ever develop into a situation which even remotely resembles the Kashmir problem. But Kashmir has pushed Punjab out of the screaming headlines, and that is why probably Government's good actions have not been brought to the notice of the people of Punjab.

Sir, first of all, the most important irritant with the people of Punjab, and particularly the Sikh community there, has been complete and total inaction and impotence in the face of the riots of Delhi. This Government has now set up Special Courts and set up a special machinery for the prosecution of those who participated in those ignominious crimes. And if even these things were brought to the notice of the people of Punjab and of some people who reside outside India and try to influence events inside India, I think, Sir, this would have been a great soothing factor. Unfortunately, not only the publicity has been somewhat defective but even the steps taken remain as if on paper and concealed behind curtains. For example, no regular FIRs have been filed and no conspicuous arrests have been made. I wish some real culprits were found out, manacled and marched on the streets of Delhi, and that would create a most soothing effect upon the people of Punjab. But, Sir, unfortunately, nothing of the kind has yet been done. Sir, there has been a generous increase in compensation for the victims of violence, and it is very, very generous extension of relief work. Then, Sir, all peple who were detained in Punjab jails without any specific charges of criminal offences have been released. Complete jail delivery has taken place and only a handful of people continue to remain in the jails of Punjab.

Sir, the Government does seem to have given very positive and strict instructions that fake encounters must be avoided at all costs. I do not know whether these instructions have percolated down to the policemen who, unfortunately, have acquired a vested interest in the very crimes which they are supposed to prevent. But, Sir, so far as the Government's intentions are concerned, the Government has made a policy decision and has made it very clear that under no circumstances shall fake encounters be tolerated.

It is fair to state however that I continue to receive reports from Punjab that some kind of fake encounters are still taking place. These are few and far between. Even this fact ought to be publicised and made known. One of the major steps which has been taken is that the Govt. have demolished those hated interrogation centres which were unearthed by a group of young people, a bunch of three, among them a very young lady lawyer. They had gone all the way to Punjab, made investigations and

[Shri Ram Jethmalani]

unearthed these barbarous interrogation centres which were nothing but the medievil torture chambers. They have all gone and not one now survives in Punjab. But, unfortunately again, nobody knows that the Government has achieved this.

The Government has taken upon itself plans for rehabilitation of those who, under temporary religious provocation, deserted their post of duty. There have been plans for economic growth even waiving some ideological preferences and objections. For example, there was great controversy over the Pepsi plant. But because we did not want to cause any inconvenience to the farmers of Punjab who had tuned their production and agriculture to meet the needs of this new industry, we allowed this to go on. I hope the Punjab farmer is at least going to appreciate what this Government has done.

Sir, a very serious effort is being made to create new opportunities for employment of young people so that we create a new motivation for those people who are today engaged in careers of violence and that they should return to peaceful ways. These are significant achievements.

Sir, what do we do more than this? We can't pretend that the Punjab problem has been solved. We cannot just push it under the rug. So far as I am concerned, I have said it before and I wish to repeat that any sensible policy in Punjab must be directed towards winning the minds of the Sikhs. I said a few years ago—In fact, I said it three years ago—that "a Sikh is a brave warrior and the nation needs him for its defence; he is a tireless worker and the country needs him for its prosperity. With his sword and sacred book consisting of the hymns of Hindus, Sikhs and backward class divines from all parts of India, we all need him for our secularism. I do not want a sullen, defeated Sikh sulking away in secret humiliation, feeling alineated from the surrounding society and bereft of a commitment to do or die for his country. The Army and the Police may succeed in liquidating him. But in the process the country will have lost an asset of incalculable value. Gandhiji taught us that when one conquers by force, one only conquers but half the foe. I want to salvage intact the Sikh who fought against the Mughal tyranny, who rescued Hindu girls kidnapped and sold in markets abroad, who fought the British and provided the highest number executed or deported to the Andamans, who bore the main brunt of India's partition and yet threw in his lot with India and whose peaceful *Jathas* mocked at Shrimati Indira Gandhi's emergency." Now this is the policy which I hope will be pursued and not the policy which is unfortunately being advocated by some seemingly very intelligent people in this country who seem to suggest that our policy should be based on two factors—victory by force of arms and to make the entire community grind its nose in the dust. Such policies are suicidal. These are going to create a situation in which the country would have lost one of its biggest assets that we can boast of. Sir, I speak today under the shadow of a personal disappointment. I call it not merely a personal disappointment but a public failure. My friend, Mr. Hanspal, is very right when he says that I had put too many of my Punjab eggs in the Samranjit Singh basket. Sir, it is a matter of great personal sorrow to me that for reasons which I wish to discuss in this House very shortly and briefly that this gentleman has, in some sense, been a serious disappointment to me. But in spite of this disappointment which I have suffered, my conviction remains the same that the Punjab policy will have to be the policy which I have been advocating for the last three years, namely, the policy of reconciliation, the policy of bringing people to the mainstream of national life and weaning them away from the ways of crime and violence. Sir, three things require to be done very immediately, and

I hope the Minister will take notice of this. You have got to hold elections. Sir, we have received wrong advice in the matter of elections, and we have followed wrong advice, and we have not even followed our own individual judgment in this. But, Sir, these are compulsions of parliamentary democracy. We cannot ride roughshod over those who tender this advice in good faith to us. But if you keep postponing elections on the ground that violence must first come to an end, then those who resort to violence will always prevent you from holding elections in the future. You will never be able to hold elections at all if this is the policy that all violence must come to an end. On the other hand, Sir, the moment you restore democratic process, you share responsibility with the democratically elected Government in Punjab which knows intimately how to deal with the problem and, Sir, the very fact that the democratic process is on, divert the people's energies from the way of violence and crime into normal electoral channels, and I think, Sir, that will be a very, very great achievement. Elections must not be postponed. Mr. Subramanian Swamy has moved an Amendment. I do not know, Sir, whether amendments to a Statutory Resolution of this kind are in order, but I certainly accept the spirit of Mr. Subramanian Swamy's Amendment. I wish that the Government should now decide firmly upon a date and come what may we shall hold the elections before that date. And I do not want to go up to the 15th of August. These elections must be held because climatically and otherwise the only feasible month in which you can hold elections in Punjab will probably be the month of June, and July and August will be too late. And the moment this Government decides a date and makes it clear that it is not going to take full advantage of the six-month period provided by this Resolution, I think, you will have provided the biggest healing touch, the most effective healing touch to the people of Punjab, and you will see the magic effect that it has upon the population of Punjab. And, Sir....*(Time bell rings)* Sorry, Sir, I will just take two more minutes and I am finished. Sir, another important thing which has got to be done is...

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: You will finish your speech, you are not finished.

SHRI RAM JETHMALANI: If you want to finish me, I will surrender even to that.

SHRI HARVENDRA SINGH HANSPAL: No, no, you said, 'I am finished'.

डा० रत्नाकर पाण्डेय (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से इनके नेताओं से प्रार्थना करूंगा कि इसको पंजाब का मंत्री बना दें ताकि सारी समस्या हल हो जाय। हमको यहां पर बार बार दोहराना पड़ता है।

SHRI RAM JETHMALANI: Sir, I am at least grateful for one change in Prof. Pandey that he has become a little more friendly or, shall I say, little less unfriendly.

डा० रत्नाकर पाण्डेय: प्राइम मिनिस्टर पर उसका असर पड़ेगा।

श्री राम जेठमलानी: आप बोलते रहेंगे तो असर पड़ जाएगा।

श्री प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र): पान खा रहे हैं, पान का प्रभाव है।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार): पान का प्रभाव नहीं है, मान का प्रभाव है।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): दोनों का है।

SHRI RAM JETHMALANI: Now, Sir, the second step which the Government must seriously ponder over, and this is one of the major causes of Simranjit Singh Mann's frustration and change of front though I must concede, Sir, that during the last three or four days, the statements which he has been making now are again becoming normal

[Shri Ram Jethmalani]

statements and, I think there is a significant change in his attitude. The greatest irritant which has turned him away from once being the Government's full-blooded supporter into a angry critic of the Government is that his request—and this is not his request alone, this is the request of an overwhelming majority of the people of Punjab—that the present establishment in Punjab, the bureaucratic set-up and the police set-up must be speedily displaced. Sir, we have carried on with this kind of a machinery for the last so many years, and that machinery has failed.

We do not wish to go into the causes of the failure. But the fact of the failure is incontrovertible. Wisdom requires that this machinery which has been tried for the last many years and which has failed is changed promptly. Nobody suggets that you send a particular officer there. But you must change those officers who, in the eyes of the local population, have become visible symbols of State terrorism. Unless they go, unless they are speedily made to go, the Punjab problem is not going to be resolved because we are dealing not merely with an ordinary problem of law and order, but we are dealing with a certain amount of strange motivation, a strange brainwash. Unless you debrainwash, unless you start that process, you cannot resolve the problem.

This brings me to the last point that I wanted to make. Often we hear, sometimes from responsible spokesmen of the Government, 'We do not want to talk to the terrorists; we do not want to talk to the militants'. These are brave words, but they are foolish words. They contain a lot of bravado but do not contain any wisdom. Even in times of war, countries and nations who are at war keep the diplomatic channels of communication alive. Even when you are at war, you still go to the United Nations, sit across the table and discuss your problem. It is a very simplistic attitude to crime. All criminals are not candidates for jails and for gallows. There are criminals who are required to be put into lecture rooms, into class rooms, into gurudwaras and temples, to be given some religious instruction. They are candidates for psychiatric lectures, for psychiatric homes and for mental homes, if you please. Therefore, Sir, if you want to wean away the ideologically-motivated militant and bring him back to the fold, you have got to talk to him. You have not only to talk to him, but you have to talk to his friends, his advisers, his sympathisers and his financiers,—if you like—who are in various parts of the world.

AN HON. MEMBER: You had been to Mann?

SHRI RAM JETHMALANI: I am doing my best. I am not ashamed of it. I will continue to do it. I am glad, at least, I have Dr. Pandey to support me and to appreciate me occasionally.

SHRI P. SHIV SHANKER: Both of you have become very good friends.

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): Miracles happen.

SHRI RAM JETHMALANI: Therefore, while supporting the Resolution, let us, at least, resolve that never again shall we bring forward another Resolution here that we are going to restore the democratic process in Punjab and that must be in the spirit of Mr. Subramanian Swamy's amendment. It should be even before the 15th of August, long before the 15th of August. Thank you. *(Interruptions)*

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Are you all clapping for my amendment or...

SHRI KAMAL MORARKA: I am clapping because he took your name twice.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: उपसभाध्यक्ष महोदय, अभी-अभी पंजाब स्टेच्युटरी रेजोल्युशन के ऊपर हमारे मित्र सांसद राम जेठमलानी जी बोल रहे थे और

वाकई उन्होंने अपनी हमदर्दी जो पंजाब के बारे में जताई, इससे यह पता चलता है कि उन्हें पंजाब की तकलीफ का अहसास है और इसको समझकर उन्होंने अपना वक्तव्य रखा है। उपसभाध्यक्ष महोदय, पंजाब के बारे में जब भी हम इस सदन में चर्चा करने बैठते हैं तो हमारा दिमाग किसी और ओर चला जाता है और आदमी सोचने के लिये मजबूर हो जाता है कि आखिर क्या हो गया है पंजाब को, आखिर कौन सी कमी आ गई है पंजाब में। पंजाब के बारे में अगर सोचा जाय तो किसी कवि ने लिखा है कि:

'Punjab is a land of extremes'. If you think of water, it is an extreme. If you think of foodgrains, it is an extreme. If you think of bravery, it is an extreme. If you think of patriotism and nationalism, it is an extreme. Even if you think of love and love songs, it is an extreme. Now, if you think of terrorism, it is an extreme.

अभी टैरोरिज्म किस तरह का है यह सोचने की बात है। अभी राम जेठमलानी जी कह रहे थे कि...

SHRI N.E. BALARAM (Kerala): Is love song also an extreme?

SHRI S.S. AHLUWALIA: Yes. You know there is only one Juliet and Romeo and they are famous throughout the world. But in Punjab, we have had Heer Ranja, Sasi Punnu and Laila Majnu. They were all from Punjab, undivided Punjab. We have Shiri Farhad. They are all love-stories. Yes. Punjab is famous for love. I married a Bengali girl. This was again a love marriage. That is why I had a love marriage. We respect and regard love.

SHRI V. GOPALSAMY: I sympathise with the Bengalis.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Prof. Saikia is worried about Assamese.

महोदय, यह एक्सट्रीम की लैंड जो है जहां हर चीज़ एक्सट्रीम में है। वहीं की बात अभी वह कह रहे थे। उन्होंने कहा कि हर टेररिस्ट को या एक्सट्रीमिस्ट को इस मद्दे नज़र से देखना चाहिए कि किसी को धर्म की आवश्यकता है, किसी को कर्म की आवश्यकता है, किसी को दवा की आवश्यकता है, किसी को दारू की आवश्यकता है (व्यवधान) In Bihar *daru* means medicine. Not *dava daru*, but *dua daru*.

महोदय, मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री महोदय को बताना चाहता हूं कि एक ऐसा वाक्या पंजाब की धरती पर अभी कुछ दिन पहले हुआ। डेढ़ महीने पहले तरनतारन में जगराज सिंह नामक एक आतंकवादी को पुलिस ने गोली से मार डाला। पुलिस ने शायद सोचा था जगराज सिंह को मारने के बाद शायद वहां के लोग खुशी मनायेंगे, राहत की सांस लेंगे परन्तु ठीक इसका उल्टा हुआ। उपसभाध्यक्ष महोदय, आप आश्चर्यचकित होंगे कि जगराज सिंह के मरने के बाद उसकी डेड बाडी जब पुलिस ले कर आई तो डेड बाडी को छुड़ाने के लिए हज़ारों बूढ़े-बुढ़ियां, जवान औरतें और जवान आदमियों ने थाने का घेराव किया और उन्होंने उसकी डेड बाडी की मांग की। आपको आश्चर्य होगा कि वह डेड बाडी मांगने वाले सिख नहीं थे वह सारे के सारे हिन्दू थे। आपको यह भी आश्चर्य होगा कि करीब तीन लाख आदमी इकट्ठे हुए जिसमें करीब 50 प्रतिशत से भी ज्यादा लोग हिन्दू थे। वहां छाती पीटते, सियापा करते, अपने सिर के बालों को नोचते हुए हिन्दू नज़र आए जिन्होंने कहा कि हमारा मसीहा मार डाला गया, जो हमारी पुलिस के अत्याचारों से रक्षा करने वाला था उसको मार डाला गया। महोदय, इलाज की बात सोच रहे थे। यह ऐसे लोग हैं जिनको हमने आतंकवादी करार कर दिया है। आज तक हमारे पास कोई डिवाइस नहीं है कि हम किसे आतंकवादी कहते हैं। आतंकवादी कौन है? कल इसी सदन में सी०पी०आई० और सी०पी०एम० के नेता भी कह रहे थे कि हमें उनको नेशनल मेनस्ट्रीम में वापिस लाना है, इन लोगों को भगाना नहीं है। वापिस लाने के लिए जो मेन चीज़ की जरूरत है हम उसको आइडेंटीफाई करें कि आतंकवादी कौन हैं और कौन नहीं हैं। महोदय, हमारे में यह कमी रह गई है जिसके कारण दिन-प्रति-दिन इन आतंकवादियों की संख्या बढ़ती जा रही है। अभी मंड एरिया में सरदार कर्म सिंह जो कि ग्राम पंचायत का सरपंच इलेक्टेड है उसकी जमीन मंड एरिया में पड़ती है। वह एक दिन कपड़े उतार कर दरिया में स्नान कर रहा था। पुलिस किसी आतंकवादी को पकड़ते हुए वहां पर पहुंची। जब उसको आतंकवादी नहीं मिला तो वह इसके कपड़े उठा कर ले आई और इस को पकड़ कर ले गई। उसके बाद केस कचहरी से खलास कर दिया गया। इसके बावजूद, उसको छोड़ने के दो दिन

[श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया]

बाद एंटी टेररिस्ट एक्ट के अन्तर्गत उसके वारंट निकाल दिये गये और उसको फिर से ढूंढना शुरू कर दिया। उसके घर की कुर्की कर डाली। सोचने की बात है, एक तरफ ज्युडिशियल कस्टडी से उसको रिहा कर दिया, ज्युडिशियल आर्डर हो जाए और छोड़ दिया जाए और दूसरी तरफ उसके पीछे फिर पुलिस लग जाए, पकड़ने के लिए तैयार रहे, यह सोचने की बात है कि आखिर हम चाहते क्या हैं? चाहने की बात जब आती है तो हमारे राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह बड़ी लच्छेदार भाषा में कहते हैं। 14 मार्च को वह चण्डीगढ़ में एक भाषण दे रहे थे, भाषण देते वक्त वह कहते हैं कि मुझे जनपक्ष चाहिये। He said, "This is why I feel that there is need to constitute such an advisory committee to give it a people's touch."

इन्होंने 14 मार्च को यह अनाऊंस किया और आज तक वह एडवाइज़री कमेटी नहीं बनी। और अगर बनी है तो कम से कम हमें नहीं मालूम है। 14 मार्च को उन्होंने कहा कि पंजाब में पीपुल्स ओपीनियन लेने के लिए मैं एडवाइजरी काउंसिल बनाउंगा, एडवाइजरी कमेटी बनाउंगा, पर आज तक वह वक्तव्य समाने नहीं आया। उसके बाद और कहते हैं कि—

> I am for establishing the rule of law in the State and have directed the Government that there should not be injustice in the State. He expressed anguish at the recent massacre at Abohar and Taran Taran. Human blood is human blood and a mother's tears are mother's tears, he said in an emotional voice.

यह इमोसनल वायस में, लच्छेदार भाषा में बातें वे कह तो आते हैं पर उनका क्रियान्वयन नहीं होता है, उनको ईम्प्लीमेंट नहीं करते। आज तक यह एडवाइजरी काउंसिल क्यों नहीं बनी और अगर बनी है तो हमें और इस सदन को नहीं पता है और अगर बनाई है अगर कहीं खानापूरी की गयी है तो वह क्या कर रही है और क्या सुझाव पंजाब के बारे में दे रही है यह मैं जानना चाहता हूं।

महोदय, इसी तरह से इधर सदन चल रहा था और पूरे मुल्क को गुमराह करने के लिए उधर आपने नेशनल राइफल्स बनाने के लिए 29 अप्रैल को घोषणा कर दी। नेशनल राइफल्स — यह पंजाब के बारे में आप एक नया एडीमिनिस्ट्रेटिव ढांचा बनाना चाहते हैं और रायपुर के आदिवासियों के बीच भाषण देते हुए आप इतनी बड़ी घोषणा करते हैं। आपको पता है कि आपने नेशनल राइफल्स की बात की है कि रिटायर्ड लोगों को लेकर आप बनाना चाहते हैं। ब्रिज बिटवीन पैरा मिलिट्री आर मिलिट्री फोर्सेज। आप नेशनल राइफल्स में इन रिटायर्ड लोगों को लायेंगे और आतंकवादियों के हाथों में जो बंदूकें हैं वे ए.के.47, 74 हैं और ए.के.94 जो अब लेटेस्ट एसाल्ट चाइनीज राइफल आ गयी हैं वह एक सेकेण्ड में 7 गोलियां निकालती हैं तो वे इनका मुकाबला किन बंदूकों से करेंगे। उन रिटायर्ड जवानों को क्या देंगे किस चीज से उनका मुकाबला करवायेंगे या आप 10 हजार रिटायर्ड आफिसर्स या रिटायर्ड सोल्जर्स को इस आग में झोंक देना चाहते हैं कि ये भी मारे जायें। इनको भी मुल्क के लिए लायेबिलिटी समझ रहे हैं और इनको झोंक कर आतंकवादियों के हाथों मरवा देना चाहते हैं। आपने जब कोई फैसला किया है तो इस पर विचार करने की जरूरत है। नेशनल राइफल्स के बारे में जब आपने विचार किया तो क्या आपने किसी भी पार्टी के साथ डिस्कशन किया? आपने पार्लियामेंट को कान्फीडेंस में लिया? आपने किसी पार्टी के नेता को बुलाकर उस पर बहस की, उनके सजेशन्स लिये? आपने कैसे यह फैसला लिया? मैं आपके माध्यम से कम से कम मंत्री महोदय से ये सब जानना चाहूंगा क्योंकि ये फैसले पंजाब के बारे में हैं। पंजाब के बारे में जिस चीज का फैसला आज जरूरी है वह है कि वहां चुनाव होने चाहिये। उन चुनावों के बारे में आप क्या कहते हैं, पंजाब के बारे में जो फैसला आज जरूरी है वह है कि सिमरनजीत सिंह मान के जो रोज स्टेटमेंट आ रहे हैं उनके बारे में क्या फैसला है? कभी कभी वे कहते हैं कि मैं कांस्टीट्यूशन नहीं मानता। कभी कभी वे यह कहते हैं कि मैं जिन्दा का भक्त हूं। कभी कभी वे कहते हैं कि इस मुल्क के जो सिख फौजी हैं, वे कल जब पाकिस्तान से युद्ध होगा तो साथ नहीं देंगे और उसकी भर्त्सना जनता दल या विश्वनाथ प्रताप सिंह आज तक नहीं कर सके हैं, आज भी उनके साथ समझौता करने के लिए तैयार बैठे हैं, आज भी उनके साथ ब्रेकफास्ट मीटिंग, डिनर मीटिंग्स आदि होती हैं। इस बात को सोचने की जरूरत है कि पंजाब के बारे में जब भी कोई फैसला आप करें, जब भी कुछ सोचें तो आप ऐसा मत सोचें कि किसी आदमी के साथ आपको कोई फायदा हो रहा है तो आज उसके साथ आप हाथ मिला लें। यह हाथ मिलाना हो सकता है महंगा पड़े। हो सकता है कि एक दिन इस मुल्क को

ऐसे कगार पर खड़ा कर दे जहां न इधर के रहें न उधर के रहें। महोदय, सिमरनजीत सिंह मान ने एक बयान देकर पूरे सिख समाज के माथे पर कलंक तो लगाया ही है कि सिख फौजी हिंदुस्तान की फौज के साथ नहीं खड़ा होगा। उसको क्या अधिकार है और ऐसे स्टेटमेंट देने पर आपने आज तक उसके खिलाफ सेडीशन का केस क्यों नहीं बनाया, उसको गिरफ्तार क्यों नहीं किया जो हमारे मुल्क में डिसिप्लिन्ड फौजियों के खिलाफ स्टेटमेंट दे रहा है।

क्या उनका कान्शंस, उनके विवेक की धरोहर वही है। उनके विवेक की भाषा वही समझते हैं।

महोदय, यहीं विचार खत्म नहीं होता। **(समय की घंटी)** पंजाब के बारे में तो आप अंगुलियां दिखाने लगते हैं। सिंसेरिटी का यहीं से तो पता लगता है।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): नहीं, यह पहले ही बात हो चुकी है कि समय के बारे में ध्यान रखना चाहिए।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: समय की कमी नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): मैं कहता हूं कि अब आपको पूरा करना चाहिए।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: आपने डिनर पर जाना है।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): मुझे नहीं जाना है। आपका मुझे पता नहीं है। आप पूरा करिए।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: पंजाब के बारे में जब भी बात होती है, तब इस सरकार को समय का अभाव हो जाता है।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): इसमें सरकार की बात नहीं है।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया। क्योंकि इस सरकार ने इतने वचन दिये हैं, इस सरकार ने इतनी कहानियां सुनाई हैं कि वह सारे पूरे नहीं कर सकते, तो हर वक्त समय का अभाव लगा दिया जाता है।...**(व्यवधान)**

श्री वीरेन्द्र वर्मा (उत्तर प्रदेश): क्योंकि दस साल तक आपने...**(व्यवधान)**

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: मैंने पहले भी स्वीकार किया है कि हमारी कमियों के कारण हम यहां बैठे हैं। वह कमियां कम से कम अपने आप में मत रखें, नहीं तो बहुत जल्दी इधर आओगे।

एक माननीय सदस्य: सही कर लेंगे। हम चाहते हैं कि आप थोड़े दिन उधर रहो।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: हम चाहते हैं कि पंजाब का मसला हल करो और बुलंदी से हल करो और उसमें पहचानने की कोशिश करो कि कौन आदमी किस स्थान के लायक है और उसको कहां बिठाना है।

सिर्फ राजा साहब के सामने राजा बोल लेने से, उसके साथ पूंछ मत हिलाने लगो। जिस चीज की जरूरत है, उस चीज से हम दूर भाग रहे हैं।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): मैं आपसे प्रार्थना करना चाहता हूं कि अब आपको अपनी बात पूरी करनी चाहिए, क्योंकि यह तय हो चुका है...**(व्यवधान)**

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: आप कहिए, मैं बाहर चला जाता हूं।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): यह बात ठीक नहीं है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आपको पूरा करना चाहिए क्योंकि आपस में यह बात तय हो चुकी है...**(व्यवधान)**

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: आप मुझे बोलने दीजियेगा, तभी तो मैं पूरा करूंगा।

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): आप अगर पूरा करेंगे तो मैं दूसरों को बोलने दूंगा।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: आप कहिये, तो मैं बैठ जाता हूं।

उपसभाध्यक्ष: ना, ना, मैं यह नहीं कह रहा हूं। आप जल्दी पूरा करिये, इतना ही मैं कह रहा हूं।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: महोदय, आज का जो माहौल चल रहा है, जब हमारे मुल्क की सरहदों पर काले बादल मंडरा रहे हैं और उस वक्त पर सिमरणजीत सिंह मान का इस तरह का स्टेटमेंट आया। इस सरकार ने उसके खिलाफ क्या कार्यवाही की है, यह मैं जानना चाहता हूं? सिमरणजीत सिंह मान से उस स्टेटमेंट का संशोधन करवाने के लिये कोई कोशिश की गई या आज तक जो एक मियाद रहती है कि एक मेम्बर आफ पार्लियामेंट इलेक्ट होता है और जब तक वह शपथ नहीं लेता, उसने शपथ नहीं ली, उसकी मेम्बरशिप कैंसल की गई, उसका नोटिफिकेशन हुआ—अगर नहीं हुआ तो एक तरफ मुफ्ती मोहम्मद सईद बहुत बड़ा स्टेटमेंट देते हैं कि पंजाब के आतंकवादियों से गन प्वाइंट पर कोई डिसकशन नहीं होगी और दूसरी तरफ उसके

[श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया]

खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं करते। कार्यवाही करने की जरूरत है अपना जहन साफ रखिये। दिल साफ रखिये और इरादे साफ रखें और सामने आइये और बताइये कि पंजाब के बारे में क्या करना चाहते हैं और उसके पहले जो-जो फैसले विश्वनाथ प्रताप सिंह ने किये हैं, खास करके जैसे मैंने कहा कि एडवाइज़री कौंसिल बनाई गई।

मैं जानना चाहता हूं कि उन्होंने किस-किस को मेंबर बनाया? 14 मार्च को चंडीगढ़ में डेक्लेयर किया। आज तक उस एडवाइज़री कौंसिल में कितने मेम्बर डेप्यूट किये हैं, कौन-कौन मेम्बर हैं और उसके लिये क्या गाईडलाईन बनी हैं?

यह एडवाइज़री कौंसिल क्या करेगी और वह क्या सिफारिशें पंजाब के लिये दे रही है, यह मैं जानना चाहता हूं?

अंत में आपके इस स्टेट्युटरी रेजोल्यूशन का समर्थन करते हुये मैं इजाजत चाहता हूं।

धन्यवाद।

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal): I will be extremely brief.

With extreme reluctance I would like to support this Resolution for extenstion of President's Rule in Punjab for another six months. On principle our party is opposed to imposition of President's Rule, but in the special circumstances created in Punjab we have no other options and no way out. So, we have to support the Resolution.

What I want to say is that the Punjab problem has been continuing for a long time. The earlier Government thoroughly bungled the Punjab situation, and this made this Government also to dillydally in defusing the Punjab problem. The Rajiv-Longowal accord was signed long back when Mr. Rajiv Gandhi came to power, and for that Mr. Longowal had to sacrifice his own life, he had to make a supreme sacrifice. Unfortunately, during its regime the earlier Government thoroughly forgot about the Rajiv-Longowal accord, and nobody talked about it. But some hope was roused on the basis of the Rajiv-Longowal accord that if the principles of the accord were implemented, then, the Punjab problem can be tackled properly.

Sir, I would only request this government that while taking administrative measures to curb terrorism, it should take seriously political initiative to defuse and tackle the problem. Of course, the Government has taken certain steps. I appreciate them. The Government has held discussions also so far as political parties are concerned. Now from the grassroot level people should be roused, and all-party efforts should be mobilised to rouse the people to combat terrorism.

At the same time, I would like to say that from our side, from the Government side and from the side of the different political parties who are committed to democratic and secular values, attempts should be made to win over the youth in Punjab. Many of them are lured by terrorists. Many of them are unemployed. Many of them are misled. Many of them are frustrated, and this frustration and unemployment ultimately led them to terrorism. They become recruits. They fall prey to terrorists. They are utilised by the terrorists and their Pakistani mentors to destabilise Punjab and the country. So, I would request the Government that it should pay special attention to the youth for giving them employment so that they can be won over to the side of the Government, to the side of the mainstream.

So, I would hope that in Punjab the Government would see that at the earliest normalcy is restrored and that election would be held in no time.

Thank you, Sir.

श्री कृष्ण लाल शर्मा (हिमाचल प्रदेश): महोदय, पंजाब के संबंध में इस प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए

और जो संशोधन मि० स्वामी ने दिया है उसका विरोध करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। पंजाब के बारे में 6 महीने के लिए और प्रेसीडेंट रूल को एक्सटेंड करने की बात कही गई है। मैं श्री राम जेठमलानी की बात समझ सकता हूं, मैं स्वामी जी की भी बात समझ सकता हूं श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी जी की बात, शायद जनरल अरोड़ा की बात भी मेरी समझ में आ जाएगी कि इलेक्शन जल्दी कराए जाएं, लेकिन मेरे जो मित्र इस समय कांग्रेस में हैं, वे जब इलेक्शन के बारे में कोई बड़ी उत्सुकता दिखाते हैं तो मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। जो पार्टी...**(व्यवधान)**...मैं अभी जरा बता रहा हूं। जो पार्टी अपनी ही चुनी हुई सरकार का संरक्षण नहीं कर सकी, 1980 में सरकार चुनी गई थी जिसमें दरबारा सिंह चीफ मिनिस्टर बने थे, वह सरकार उस पार्टी ने खुद तोड़ी। उनको तोड़नी पड़ी। इसके बाद बरनाला के समर्थन के साथ एक सरकार बनी। उसको भी तोड़ना पड़ा। 1980 से ले कर 1990 तक जिस पार्टी ने दो-दो बार गवर्नर रूल लगाया, तीन-तीन साल के लिए लगाया, यह नहीं कि कोई 6 महीने के लिए या फिर एक साल के लिए लगाया, पहली बार 1982 से 1985 तक और दूसरी बार 1987 से 1990 तक तीन-तीन साल के लिए वहां पर राष्ट्रपति शासन लगाया और बीच में आर्मी रूल भी लगाया और वह लोग आज इतनी जल्दी में चुनाव होने चाहिएं और यह बात होनी चाहिए तो मेरी समझ में यह बात जरा कम आती है। मेहरबानी कर के जरा पंजाब की परिस्थिति को देखते हुए कोई बात कहिए। मेरा यह मत है कि पंजाब की परिस्थिति दलगत राजनीति से बहुत ऊपर उठ चुकी है। हम इसे दलगत राजनीति का खिलवाड़ न बनाएं। हम प्राथमिकता तय करें कि पंजाब में प्राथमिकता चुनाव है या पंजाब में प्राथमिकता शांति है? क्या हमें शांति स्थापित करनी चाहिए, उसके बाद चुनाव कराने चाहिए या चुनाव करा के फिर से दरबारा सिंह की, बरनाला जी की सरकार बनाकर फिर गिराना और फिर वही बातें रिपीट करनी चाहिए? इस के बारे में हमें विचार करना चाहिए।

महोदय, आज पंजाब के बारे में बड़े दुख के साथ में कहना चाहता हूं कि हमारी पिछली सरकार ने जो पंजाब के अंदर तीन ऐसे कांटे बोए हैं, पता नहीं हमें किस तरह से उन को निकालना होगा? किस तरह से उस चीज को दूर करना होगा? महोदय, कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि श्री अहलुवालिया जी बड़े जोर से कहते हैं कि, अगर मान तलवार लेकर आएंगे तो मैं कार्बाइन लेकर आऊंगा। लेकिन इनके द्वारा क्रिएट किए हुए जरनैल सिंह भिंडरावाले यहां शस्त्र लेकर घूमते रहे और इन के बड़े-बड़े मंत्री उन के पांव चाटते रहे। उस समय कोई नहीं बोला। अगर उस समय उस चीज को रोकते तो आज यह स्थिति नहीं होती।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: किस की बात कर रहे हैं?

श्री कृष्ण लाल शर्मा: भिंडरवाले का क्रिएशन आप ने किया। ...**(व्यवधान)**... अहलुवालिया जी, आप को अब सुनना पड़ेगा। ...**(व्यवधान)**... मैं बोलूंगा, पंजाब के बारे में आप को कुछ पता नहीं है। आप गए नहीं हैं, मैं पंजाब को जानता हूं। आप को सुनना पड़ेगा, पंजाब में भिंडरवाले का क्रिएशन ...**(व्यवधान)**...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: इस तरह की बातें उठाने से कोई फायदा नहीं है।

श्री कृष्ण लाल शर्मा: पंजाब में आपरेशन ब्लू स्टार, पंजाब में भिंडरावाले का क्रिएशन और दिल्ली के रायट्स—ये तीन ऐसे कांटे हैं जो हमारी छाती में चुभते रहेंगे। इस बारे में हमें सोचना चाहिए। इसलिए मैं कह रहा हूं कि दो चीजें तय कीजिए। पंजाब में प्राथमिकता क्या है? भारतीय जनता पार्टी का, हमारी पार्टी का यह मत है कि हम लोग वहां शांति स्थापित करें। उस में सभी दल सहयोग करें और फिर उस के बाद चुनाव हों। लोग कहते हैं कि डेट फिक्स करो। सुब्रह्मण्यम स्वामी कहते हैं कि अगस्त में होने चाहिये। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर डेट फिक्स करनी है तो शांति स्थापित करने की, किलिंग्स बंद करने की डेट फिक्स करो। इस समय चुनाव की डेट फिक्स करने का समय नहीं है। डेट फिक्स करनी है तो किलिंग्स कैसे बंद होंगी, शांति कैसी स्थापित होगी—इसकी डेट फिक्स करें। उस में तो हम राजनीति चलायेंगे और फिर कहेंगे कि चुनाव होना चाहिये। हमारी पार्टी चुनाव के विरोध में नहीं है। हम चाहते हैं कि चुनाव हों। जल्दी हों, अभी हों, लेकिन हमारी प्राथमिकता यह है कि हम चुनाव कराना चाहते हैं शांति स्थापित कर के क्योंकि चुनाव फ्री एंड फेयर होने चाहिये।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: आप का यह मेडन स्पीच है, हमें बोलना नहीं चाहिए, उसूल तो यह है,

[श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल]

लेकिन आप कुछ ऐसी बात कर रहे हैं कि जिससे आप प्रोवोक कर रहे हैं। मेहम में दोबारा चुनाव क्यों हो रहे हैं?

श्री कृष्ण लाल शर्मा: मैं पंजाब पर बोल रहा हूं ...**(व्यवधान)**...

श्री वीरेन्द्र वर्मा: आप अमेठी को क्यों भूल जाते हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्री कृष्ण लाल शर्मा: मेहम पंजाब में नहीं हैं, मैं पंजाब पर कनसेंट्रेट कर रहा हूं।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: अहलुवालिया जी ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है कि हम ने गलतियां की हैं और हम यहां बैठे हैं । काइंडली आप ऐसी गलतियां मत कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री कृष्ण लाल शर्मा : आप हमें उपदेश नहीं दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (डा॰ बापू कालदाते): उन्हें बोलने दीजिए।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल: मेहम में जो हुआ ..**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (डा॰ बापू कालदाते): आप दोनों आपस में बात मत कीजिए। उन्हें सुनिए।

श्री हरवेन्द्र सिंह हंसपाल : अगर आधे मिनिट से ज्यादा लूं तो आप मुझे बिठा देना। मेहम का जिक्र इसलिए करना पड़ता है कि मेहम में इतना कुछ होने के बावजूद दोबारा इलेक्शन हो रहे हैं। इन की बात का यह जवाब है।

श्री कृष्ण लाल शर्मा: मेहम की बात आएगी तो उस पर चर्चा करेंगे। आज पंजाब की बात है, मैं पंजाब के बारे में कह रहा हूं। इसलिए ...**(व्यवधान)**...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : कांग्रेस ने नवम्बर में चुनाव कराए। कितनी हत्या हुई? आप के मेहम में ...**(व्यवधान)**... वह आप देखो, चुनाव कराओ। अब सरकार आप की है। हम ने तो चुनाव करवाए हैं।

श्री कृष्ण लाल शर्मा: आप ने एसेम्बली के चुनाव नहीं कराए। यह लोक सभा के चुनाव की बात कर रहे हैं, असेंम्बली के चुनाव कराते तो मैं आप की हिम्मत मान लेता। इसलिए महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि चुनाव की बात का हमारी पार्टी से कोई विरोध नहीं है, हम चुनाव चाहते हैं, चुनाव होने चाहिए, जल्दी होने चाहिए, डेमोक्रेटिक प्रोसिज़र जो है, वह रेस्टोर होना चाहिए, अल्टीमेटली वही इसका हल है, लेकिन हमारा आग्रह है कि सब लोग अगर इसके बारे में सहयोग देंगे कि पहले वहां शांति स्थापित होनी चाहिए और मेरा वह कहना है कि शांति स्थापित करने के बारे में जो प्रयास हो रहे हैं ...**(व्यवधान)**...

डा॰ रत्नाकर पाण्डेय: आर॰एस॰एस॰ की शाखा खोलने का टाइम चाहते हैं आप ? ...**(व्यवधान)**... आर॰एस॰एस॰ की शाखा खोलकर चुनाव कराना चाहते हैं?

श्री कृष्ण लाल शर्मा: पंजाब में चुनाव तो होने हैं, आप चाहे कितना भी कहें। ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (डा॰ बापू कालदाते): ऐसा नहीं करिए, पाण्डेय जी, बोलने दीजिए। पहली बार बोल रहे हैं।

श्री कृष्ण लाल शर्मा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ यह निवेदन करना चाहता हूं कि जब हम कुछ बातें कहते हैं तो सारे तथ्यों को ध्यान में रखकर कहनी चाहिए। हमारे कुछ मित्र यह भी कहते हैं कि हमें बात-चीत करनी चाहिए। मैं बातचीत के पक्ष में हूं। मेरा यह कहना है कि पंजाब में बातचीत का रास्ता खुलना चाहिए लेकिन बातचीत उन लोगों से होनी चाहिए जो संविधान में निष्ठा रखते हैं और जो अहिंसा के रास्ते पर चलकर पंजाब की समस्या का हल निकालना चाहते हैं और किसी एक ग्रुप से नहीं, किसी एक व्यक्ति से नहीं, इसके लिए आप ऑप्शन रखिए और नई लीडरशिप जो है, उसको ऐमर्ज होने दीजिए, क्योंकि पंजाब में किसी घिसे-पिटे लीडर से काम नहीं चलेगा, आपको नए ऑप्शन जो हैं, खोलने पड़ेंगे।

मुझे यह भी कहना है कि हम एक पक्ष को ही लेते हैं जब भी लोग बोलते हैं तो ऐसा लगता है कि जो इन्नोसैंट किलिंग हो रही है, उसकी चिंता किसी को नहीं है। मुझे यह कहना है कि इसमें भी प्राथमिकता क्या है कि जो इन्नोसैंट लोग मारे जा रहे हैं, उनकी चिंता पहले करनी चाहिए या जो इधर-उधर से कोई रिपोर्ट आती है, उसकी चिंता पहले करनी चाहिए? सब लोग कहते हैं कि यह डबल स्टैंडर्ड भी नहीं चलेंगे। मैं इस पक्ष में हूं कि दिल्ली में जो रायट्स हुए, उनके दोषियों को सजा मिले, लेकिन मैं यह भी चाहता हूं कि जो लोग दिल्ली के दोषियों को सजा दिलवाना चाहते हैं, वे अपना मुंह

खोलें, अपनी आवाज निकालें और पंजाब में भी जो लोग किलिंग कर रहे हैं उनको भी सजा दिलाने के लिए दो शब्द तो बोलें। पंजाब में भी इन्नोसैंट लोग मर रहे हैं, उनकी हत्याएं हो रही हैं, उनके बारे में कोई नहीं बोलेगा? केवल एक पक्षीय बात करेंगे तो केस कमजोर होगा। हमारा यह कहना है कि किलर इज़ ए किलर, हत्यारा हत्यारा है, चाहे वह दिल्ली में हो या पंजाब में हो। हत्यारे को दण्ड मिलना चाहिए, चाहे वह दिल्ली में हो या पंजाब में हो। और जो लोग अपने साथ, जिनसे समझौता किया, उसकी जान नहीं बचा सके। इतने लोग मरे हैं, इतने बड़े-बड़े पालिटिकल एक्टिविस्ट मरे हैं, जिनके बारे में कभी चर्चा ही नहीं होती और उसको ऐसे रख दिया जाता है कि 6 महीने में सारा हल हो जाना चाहिए। बहुत पुरानी समस्या है। मैं इस पक्ष में हूं कि सरकार 6 महीने के अंदर-अंदर शांति स्थापित करे और चुनाव कराए। ...**(समय की घंटी)**... पहली बात मैं फिर यही कहूंगा कि पंजाब की प्राथमिकता पहले शांति स्थापित करने की है, फिर चुनाव कराने की है। पंजाब की प्राथमिकता चुनाव कराने की नहीं है। इसके बारे में मेरा और मेरी पार्टी का स्पष्ट मत है और मैं चाहूंगा कि सिर्फ जल्दबाजी में कोई बातें की जाएं कि चाहे पंजाब की स्थिति कैसी ही रहे। हम तो चुनाव कराएंगे, तो मैं कम से कम इस बात से सहमत नहीं हूं। सारी बातों को अपने सामने और ध्यान में रखना चाहिए।

इन शब्दों के साथ यह जो प्रस्ताव रखा गया है, मैं उसका समर्थन करता हूं और स्वामी जी ने जो संशोधन रखा है, मैं उसका विरोध करता हूं।

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir, to restore peace, to restore democracy...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. BAPU KALDATE): In the House?

DR. G. VIJAYA MOHAN REDDY: ...and also development in Punjab I support the Proclamation. The situation in the country today reminds me of 1946 and 1947 when the entire country was swept in the flames of communalism. The reactionary forces and the British imperialist forces were behind those calamitous situations which thwarted the development of the country. We should not forget that the same forces have been there to destabilise our country. They have been imspiriang these groups of Khalistanis for the past so many years and the headquarters of the Panthic Committee was at Lahore in Pakistan from where the terrorists began getting in arms. They have created this situation and have disturbed peace in Punjab. That is why the hand of Pakistan and also the reactionary forces should be taken note of in the proper perspective that the situation deserves. In fact, at no point of time Pakistan was prepared to come and discuss this problem with India on the basis of the Simla Agreement. They have always been insisting for plebiscite, They have successfully linked these destabilising forces, all of them in Kashmir as well as in Punjab and the strategy is being worked out by the army intelligence of Pakistan. This has to be taken note of. The training that has been given is not only in using arms but for also exploiting the situations in times of war. That has come to light in Afghanistan. That means the conspiracy is very deep-rooted and it always keeps a kind of war hysteria in the background of this conspiracy so that when a conflict arises, these militant forces can create disturbances and interfere with our freedom. The situation is very grave and I want to bring to the notice of this House the statement of Mr. Simranjit Singh Mann which means an invitation to Pakistan. This cannot be tolerated and the Government should understand that a serious situation has developed in our country after the statement of Mr Simranjit Singh Mann. But the better side of the picture is also there, that is the

[Shri G. Vijaya Mohan Reddy]

people of Punjab, the workers of Punjab, the peasantry of Punjab, in spite of the killings of the poor and innocent people, in spite of the keeping the bombs in localities inhabited by poor people, in spite of terrorising of the peasants and the workers who had come from outside the State, the production in Punjab has not gone down but it has increased both in the industrial field as well as in the agricultural field. This is something which is unique. Punjab has preserved communal peace. There were attempts even to bomb religious places but that has not provoked clashes between Sikhs and Hindus. Not only that, Sir, more Sikhs have laid down their lives than Hindus and several political activists of various political parties have laid down their lives. They have laid down their lives so that Punjab may live, so that India may live. That is why, the solution of the Punjab problem lies with the people of Punjab itself. This has to be realised. The solution of Indian freedom was first in the hands of the Indian people. In the same way, the solution of the Punjab problem will be in the hands of the Punjab people. That is why the people of Punjab have to be roused into action. No differences should be allowed to creep into this particular aspect. All political parties-especially I request the Congress representatives to understand the seriousness of the situation and come forward to mobilise the people in Punjab along with other political forces. Not only an advisory committee should be formed at the State level, but advisory committees should be formed at district levels. There must be mobilisation of people as quickly as possible. Members of Parliament have also got a role to play in mobilising the people of Punjab along with advisory committees. We must move into the field. Then only people will understand what the real situation is. Productivity is going on. People are rallying round. They hate terrorism. Under the circumstances, we must move into action even to bring to the correct path the misguided youth. Mobilisation should take place. Otherwise it would become difficult. As a counter to these measures, already the terrorists are planning to have the kind of villages where they would dominate. That is why we have to raise village voluntary forces, train them and make the villagers defend themselves. The argument that there is no kind of correlation kind of united functioning, between the administrative forces and security forces cannot be defended at this stage. For example, in our own experience, in Telangana, after the police action, the entire administration was deployed from outside and it was able to man the services there. It is not difficult for the Government to see that the administrative services are tuned properly and the security forces are linked up in such a way that every village is properly screened and the terrorists and their arms dumps are unearthed and action taken properly. A congenial atmosphere should be created for holding the elections as soon as possible. During Parliamentary elections, armed terrorists were roaming about the constituencies threatening the people. It cannot be called a free election in that particular perspective. That should not be allowed by this Government. No armed groups should be allowed to move about during elections. The safety of ballot boxes and the safety of the conscience of people

must be properly safeguarded. Nobody who goes against the Indian Constitution can be given rights to contest the election. With these measures, let us build up democracy on a proper perspective in Punjab and let elections come as soon as possible. There must be mobilisation of people by all political parties and everbody must put his shoulder to the wheel in the name of the country, in the name of freedom and all the values we hold upmost in our minds. Thank you.

DR. NAGEN SAIKIA (Assam): Mr. Vice-Chairman, Sir, extension of Presidential rule in any State is not a welcome step at all. But as there is no alternative in the case of Punjab, I would support the resolution moved by the hon. Home Minister for extension of Presidential rule in the State. We should at least consider some points with utmost sincerity. Firstly, we shall have to make the people of Punjab feel the genuineness of our desire to hold the elections as soon as possible in the State. Secondly, we should create a congenial atmosphere in the State with the full help and cooperation of all the people, all the cross-sections of the people of the State. Thirdly, we should remove the feelings of anger and alienation from the minds of the concerned sections of the people, mainly the youth, and bring them to the mainstream of our national life. Fourthly, we should frustrate the attempts of Pakistan to go and supply arms and ammunitions to the extremists in Punjab. Fifthly, all efforts should be made to start the wheel of democratic political process in the State to have bright days in the State. With these words, I support the motion of the hon. Member.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Sir, it has become a ritualistic practice or exercise on the part of the successive Governments to seek the approval of Parliament to get extension of President's rule in Punjab.... *(Interruptions)*... Sir, that is the point, that it has become a ritualistic exercise on the part of the successive Governments to give legislative sanction, extraordinary legislative sanction for continuation of the Presidential rule in Punjab. I disassociate with this practice because I do not believe that this prolonging of the process of suspension of democracy can bring the situation in Punjab nearer the point of solution. Whatever might be the outcome or result of elections, we have to face the realities and by facing the realities perhaps the situation can be further improved in the direction we visualise. Even then, I do not arrogate to myself the responsibility of going against the national consensus on the question of prolonging the Presidential rule in Punjab. Therefore, with reluctance and also with criticism, I support this move because it has been on the basis of an agreement between the national parties. While doing so, I will only implore the Government to kindly listen to the complaints of the people of Punjab. My complaint is, your Governor and the Administration that is built around him is insensitive or unresponsive to the complaints of the people. I am having a letter from the leader of a women's organisation in Punjab. She has complained that the Government of Punjab is sanctioning only Rs. 50/- as the destitute allowance to the women who have no means of livelihood. Only a sum of Rs. 50/-!

Secondly, Sir, I can give many more examples to show that the present Administration in Punjab while carrying on its work for restoration of peace and tranquillity is generally unresponsive to the demands of the local people, to the problems of the local people and to the

[Dr. Nagen Saikia]

complaints of the local people. The Government which has not listened to the complaints has no right to rule. The only important feature of the present Government ruling the country is that it responds to criticism and it listens to others' advice. That is some unique feature of the present Government in New Delhi, but the Government that is now ruling in Punjab seems to be totally different in its exercise and behaviour so far as discharging of its duties is concerned. Therefore, while giving my support to the resolution I ask the Government, and more so, the Minister—the young Minister who is piloting the Resolution—to kindly ensure and create a situation in which the Administration in Punjab at least listens to the complaints and tries to do something for the solution, if possible.

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA (Punjab): Mr. Vice-Chairman, Sir, it is very unfortunate that I have to stand up once again and oppose the extension of President's rule in Punjab for another six months, but I realise that for administrative reasons it is inevitable that the President's rule must be extended. I have a spoken about the lack of wisdom on the part of the Government for not having held the elections when there was time to hold them. I have also talked often enough about the futility of the President's Rule hoping thereby to achieve congenial and peaceful conditions. However, realising that this extension is inevitable, the first point that I want to make is that the Government should work out, if it has not already done so, a time-bound action programme and consider the steps that they are going to take to ensure that the elections can be held which should, of course, be held as early as possible. Sir, as my worthy friend, honourable Ram Jethmalani, said, they should aim at holding it not later than the end of June because that is the month during which elections can be held comfortably then the rains will come and the crop season will be on. Then you will have to postpone it till possibly the end of September or October and that would be too late indeed.

The next thing that I want to stress upon is that violence has been going on for the past ten years or so and, therefore, to think that because of the President's Rule or after the elections it will come to an end automatically is, I think, only being unrealistic about it. Violence has to be brought under control slowly and it will take a long time. But the process can only be started once the democratic process has started taking root and started becoming a fact. So, please do not wait for a congenial atmosphere or peaceful conditions. I feel that a determined Government, if it has prepared its plan accordingly, can ensure reasonable conditions for holding a free and fair election. For that it can introduce even more forces for a limited period for holding elections whose aim would be to see to the conduct of elections. Its aim should not be to go after the terrorists or the militants because that process is already on. I would also like to stress here is that without a change of the present administrative and police machinery, especially the police machinery, no real peace is going to come and no real meeting of the minds is going to take place in spite of the best intentions of the Government. The change is needed at the higher levels where certain officers have to be changed and also at the lower level where many of the junior officers who have already worked out the *modus vivendi* with the anti-social elements and with the criminals and have learnt to live side by side with them. All of them live on the poor farmer who is in a terrible condition today. He has to fork out to the extortionists, whether they are the police or whether they are the criminals or whether they are the anti-social elements. If you change those people periodically and also give them

instructions to the effect that extortions must stop or, otherwise, they would be sacked, I can assure you that extortions can be brought down to a very great extent. Today, what is causing the greatest amount of anguish and worry in Punjab is this extortion because the people know that the police is not going to be of any help and so, they do not report and they also know that quite a number of policemen are involved in it.

I might mention here that the so-called Black Cat or the Special Police people are supposed to have been given instructions to stop their operations of killing the terrorists because they were really indulging more in extortions and other anti-social activities. Whatever they might have been told to stop, I do not know—and I have not been able to get definite information—whether they have been disarmed. I fear that a lot of this thing is being done by those special police officers who were recruited by the last administration.

Another point I would like to mention is that there is no doubt that by extension of the President's rule the goodwill that had been generated by the Prime Minister during his visit on 7th December has disappeared and the longer you take, the more the alienation, is going to take place. Therefore, there is need for two things before we hold elections: (1) for this Government to declare generally as to the new State of Punjab, what additional powers if is going to get? It is the Government's policy that they are going to work for devolution of greater power to the States. They should make up their mind by then and tell all the States about the greater autonomy for the States. It should have a certain amount of effect. (2) There is also the question of making some special gesture. I have come to know that in the ministry of Information and Broadcasting there is a film, a one-hour film, which was made on the Sikhs' role during the struggle for independence. This film was actually made around about 1985. After reviewing it the Government at that time decided not to show it because the policy at that time was not to play up the role of the Sikhs. Those of you who have seen the serials on TV about the struggle for independence and the role of different personalities in it would have noticed that there was hardly any mention about the Sikhs in that. Well, this film was made and at one stage Mrs. Gandhi liked it and she said, "yes, we will show it".Then suddenly they decided not to show it and it is lying in the Ministry of Information and Broadcasting. I have written a letter to the Minister of Information and Broadcasting and I have suggested that it would be a good idea to show it in Punjab, in Delhi, and all over India, so that people do realise and remember the Patriotic-qualities that the Sikhs as community possess.

That brings me to the next point. I am extremely sorry that Sardar Simranjit Singh Mann in a huff said that he did not want the Sikhs to fight in case of trouble between India and Pakistan. I have already contradicted him in a press conference when I said that the Sikhs will continue to fight in the forefront, as always. Be that be as it may, I would like to mention that there is a very strong need to bring about this feeling of belonging to the national mainstream which I find when I go to Punjab is absent now, especially amongst the villagers and youth. It is necessary during this period for the Government to take certain steps through the media to make them realise that they are valued.

There is one other thing that I want to mention here and this is something to which I have been giving a great deal of thought and about which I have been feeling concerned. I think it is a matter of some importance. We talk very glibly about the unity in diversity. I think we recognize it. But I do not know whether we really accept it. There is a very important difference between the two.

[S. Jagjit Singh Aurora]

Analyse it. What does it mean? If you accept the diversity, then you must also respect the sentiments of the minority. You must also give due weight to their aspirations. I think the minority's aspirations are that their patriotism to their country is not questioned. The next aspiration is that they must have equal opportunities and they must not feel that because they are a minority they can be ignored. Next they must, where they are in sufficient strength, also enjoy political power. It would be a good thing to be generous and give them a little more than one expects if you want to help them and make them feel that they are valued citizens of this great country. That will bring in real unity indiversity. *(Time bell rings).* I think, we glibly talk about it but very rarely accept in practice.

While I am talking about this, I felt it is something worth noticing that the Sikhs have not deliberately let- down the country but the Sikhs do feel let down. If they do feel let down, the rest of the country should not think of them as terrorists or antinationals, because a few of them have gone astray. Think of the community as a whole. While I am talking about the nation as a whole, I would like to make one other point, about politics. I am sorry I am taking a little time. It is no use picking up on one person as the leader and try to build him up because, you feel, he is more acceptable to you. Normally you destroy him. We have seen Sardar Surjeet Singh Barnala and we have seen Dr. Farooq Abdullah being picked up and then destroyed. Therefore, my request is: hold election rather than saying, 'we are disappointed with S. Simranjit Singh Mann. And, therefore, what are we going to do now?' One person, howsoever bright and brilliant he may be, does not make a nation, does not make a community. You have to trust the community as a whole and hope it will rise to the occasion and be faithful as you are.

Thank you.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Mr. Vice-Chairman, Sir, the National Front Government in its manifesto had promised that they would hold election in Punjab and they accused Congress(I) of trying to smother the democratic process in Punjab and not holding election there. But the circumstances have in fact put the boot on the other foot. Lok Sabha elections were held, and now the National Front has come into power. By this Resolution they in fact want to postpone elections. In fact, the Lok Sabha election was a very good turning point. There was great expectation. There were of course, charge of rigging. But it was seen that those charges came really from parties which lost, particularly the BJP. But a number of parties did get success there. The Bahujan Samaj Party got one seat. The Janata Dal won the Jullundur seat. The Congress(I), I think, won two seats from Lok Sabha from Punjab. Consequently, I would say, the elections were held and they were peaceful. An atmosphere was created and a great hope was there. Indeed the hope was so great that the Prime Minister, in a stunt and a show, went to Amritsar in an open jeep. This was televised. It was asked as to how he could go in an open jeep whereas the previous Prime Minister could not even stir out of his house. All that has changed now. The question is: Why? In fact, the contrast came out. The change was brought out most clearly on 13th April this year when the Prime Minister went again to Amritsar. This time, in the public meeting, 80 per cent of the audience were security men. He went in a bullet-proof car. While he was addressing the meeting, a chit came from the security people saying that there was a danger. He cut short his speech, sped to the airport and returned to Delhi. In the process, I believe, Mr. Harkishan Surjeet, whom the Prime Minister took from here, was left behind. On the rush he was left behind in Amritsar. At least,

so the newspapers reported. (*Interruptions*) It is given in the newspapers. (*Interruptions*) Not only has the environment been vitiated, but on fundamental issues the Government has done nothing. For example, take the 1984 riots. Innocent people were killed. It was not a riot. It was a massacre. One of the Ministers who is in the Janata Dal now, was essentially responsible. (*Interruptions*) Do you want me to name him? He was also responsible for Bofors. He was also responsible for Airbus. So, don't provoke me. Otherwise, I will come out with facts which will embarrass them. So, the Government has done nothing about the 1984 massacre. You have done nothing about compensation. There is torture and killing of innocent people in Punjab. The Tiwana Commission has documented it. There is no issue on which you have made any progress.

I would say that it requires a great deal of flexibility to deal with Punjab. Here I must say that the Government is playing politics. As General Aurora alluded, they have played favourites as to who should be the leader from Punjab and who should come up. The leader should come up through elections. He must not be imposed from here. Everybody knows that the Janata Dal has a particular Akali leader in Punjab who is their favourite. Presently his chances are not very good in the elections. That is why elections are being postponed. So, Sir, I would say that they should take a very elastic view.

Take the question of Simranjit Singh Mann. He did take the oath as a candidate to uphold the Constitution. He made a number of statements saying that he would uphold the Constitution. He said he wanted to come to Parliament and take the oath carrying his sword. The Government seems to have become a little jittery about his bringing his sword. Perhaps Mr. Ahluwalia said he would come with AK-47. Therefore, they got nervous. I do not know. But the fact is that Simranjit Singh Mann came to the National Integration Council with his sword. He met the Prime Minister at the Ludhiana Airport with the sword. I would say that we should have been far more elastic in dealing with the issue. If you can get Mr. Simranjit Singh Mann to come to Parliament to take the oath and to uphold the Constitution and if it means bending the rules to allow him to come with a sword, we should have allowed him. But we have taken a hard line on it and in effect put the situation in an extreme form. Indeed I would say that is why I moved my amendment, and that brings me to my last point that there is no other way that this can be decided here. There is only one way, and that is to allow the people to throw up the leader, and that is through an election. What can happen in the election if Akali Dal (Mann) gets elected? What can they do? After all, the Constitution has Article 356. What can they do after all if they came to power? Are they going to declare Khalistan? They cannot because we have still the weapons of the Constitution to take care of it. So, there is no fear. This kind of fear gets generated from time to time. There was one time a fear that when the DMK came to power, they will secede Tamil Nadu. In fact, when the name of Madras State was changed to Tamil Nadu, there was so much fear in the Country. But today the DMK is completely tamed, and they would not raise their voice against...*(Interruptions)*

SHRI V. GOPALSAMY: No force on earth could tame us, no force on earth could make us compromise on what we believe. We are very strong.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): You have given up your demand for separate Tamil Nadu. This is what Mr. Subramanian Swamy is saying. What he is saying is correct.

SHRI V. GOPALSAMY: Without understanding politics, you are commenting.

SHRI V. NARAYANASAMY: We understand your sentiments. You have given up your demand.

SHRI V. GOPALSAMY: Yes, of course.

SHRI V. NARAYANASAMY: That is what Mr. Subramanian Swamy is saying...*(Interruptions)* He is saying the same thing in a different language.

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): Sir, he wants to create another Punjab in Tamil Nadu.

(Interruptions)

SHRI V. GOPALSAMY: He is ignorant of politics. Dr. Anna made a statement on the floor of this House.

SHRI V. NARAYANASAMY: We know that.

(Interruptions)

SHRI T. R. BALU (Tamil Nadu): You are very much ignorant of our history...*(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. BAPU KALDATE): Now let us finish with this Punjab.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Perhaps, I will change the word from tamed to co-opted. That might be a more harmless word that they have been co-opted.

SHRI V. GOPALSAMY:We do not need any certificate.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: There is no certificate. I am only saying that there was fear.

SHRI V. GOPALSAMY: You should not distort the facts.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: You have misunderstood it deliberately. I said, there was fear in Delhi, there was fear in the North that this is what would happen. But this has not happened. I am giving this as a plus point in your favour. But you think that everytime I speak, I must be speaking against you. That is the problem. I say this as a plus point in your favour.

SHRI V. GOPALSAMY: You are right. But you should not have used that word.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: I change the word. I change it to 'co-opted'. And I say, now you have been co-opted. So, only a year ago, they were burning copies of the Constitution. And what I am saying is elasticity in dealing. This is a country which has to be kept together by showing elasticity and by giving a certain amount of leeway. And so, when Simranjit Singh Mann takes these postures, we should therefore approach this problem with a much greater understanding than what we have done. So, I would say that election is the only way when a situation cannot be resolved in any other way. After all, one must say that the elections were held in 1977. That is how the emergency impasse was resolved. The emergency put 140,000 people in jail, and there was no way to resolve. The only way that was found was the election. The elections were held and the people spoke, and the country was saved as a consequence.

Whoever is the winner or the loser does not matter. Therefore, I must say, there is only one way and that is, elections. The Government should give a commitment here that they will not ask for another extension of President's rule and that they will hold the elections within this period. I have given a certain latitude, i.e., 15th August. Of course, there will be monsoon and all that. June might be the best month, therefore, if the hon. Minister says 'We will hold the elections earlier, in two-there months', I will not press my amendment. But if he says 'No, I cannot give any such assurance,' I am afraid, I may have to press my amendment and speak for the

people of Punjab whose voice is feebly represented in this House. Thank you.

श्री सुबोध कांत सहाय: उप सभाध्यक्ष महोदय, हमारे लिए आज पहला दिन है कि मैं इस सदन के इतने पुराने और इतने सीनियर मैंबरों के सामने खड़ा हुआ हूं और वह भी पंजाब के संबंध में बोलने के लिए, इनके सवालों के जवाब देने के लिए, उस पंजाब के संबंध में जिसके बारे में अगर कभी कल्पना भी करता है आदमी तो गर्व से सीना तन जाता है, उस पंजाब का इतिहास हम उस धरती से आते हैं उप सभाध्यक्ष महोदय, जहां गुरु गोविन्द सिंह ने जन्म लिया। मुझे गौरव है, हम उस धरती से आते हैं जहां गांधी की कर्मभूमि रही बिहार और हम उस धरती से आते हैं, जहां के लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने इस देश में दूसरी आजादी आर्थिक आजादी की लड़ाई लड़ी और हम पंजाब को जो आजादी के बाद पैदा हुए हमारे जैसे लोग हैं उन्हें जिस नज़र से देखा है और राजनीतिक जीवन में आने के बाद जो पंजाब को देखने का मौका मिला है यह दोनों तस्वीरों को देखने के बाद लगता है कि हमने कितना बड़ा अन्याय आज तक किया है उस पंजाब के साथ जो हमारे देश का गौरव है, जो इस देश का फ्रंट लाइनर रहा है। जहां की औरतें अगर बार्डर पर हों तो छाछ और रोटी लेकर बिना किसी डर और भय के जाया करती थीं और वहां के फौजियों को खाना खिलाकर आया करती थीं, आज उस पंजाब पर हम बहस चला रहे हैं कि वहां पर कोई जनतांत्रिक प्रणाली जल्द से जल्द लागू की जाए या नहीं। उप सभाध्यक्ष महोदय, मुझे याद है 1984 का वह दिन 31 अक्तूबर का दिन जो इस देश के लिए कलंक का टीका होगा कि हमारे देश के प्रधानमंत्री की हत्या हुई। शायद उससे हम बच नहीं पायेंगे और हमारे जैसा नौजवान जो उस दिन के बाद से एक नवंबर और दो नवंबर की इस दिल्ली की गलियों में दो, चार, दस लोग अपने नेताओं के साथ घूमा करते थे, जहां एक तरफ एक बिरादरी के लोग और दूसरी तरफ दूसरी बिरादरी के लोग एक-दूसरे की जान के प्यासे थे, उस दिन मैंने पंजाब के लोगों को देखा है। इस दिल्ली के चौराहे पर देखा है। शायद ज्यादातर बोलने वाले उस दिन उस दिल्ली के चौराहे पर नहीं थे, हमारे जैसे नौजवान को यह देखने का अनुभव रहा है, इसलिए आज मैं अपनी बात कहना चाहता हूं, पंजाब के लोगों के स्वाभिमान के साथ, इस देश के साथ उन्होंने खिलवाड़ किया है उनके स्वाभिमान के साथ खिलवाड़ किया है, उनके इतिहास के साथ खिलवाड़ किया है। उप सभाध्यक्ष महोदय, जो अमृतसर का इतिहास जानता हो वह जो हुआ है वह शायद नहीं किया होता। जो गोल्डन टैंपल की मर्यादा जानते थे, अगर वह इतिहास से कुछ ज्ञान लिए होते तो जो उन्होंने किया था वह नहीं किए होते। इसलिए मैं कहना चाहता हूं और वही नहीं पिछले शासन में रखने वाले लोगों ने सिर्फ यही नहीं किया कि अक्तूबर और नवंबर में घटनाएं घटीं उनके लिए कहीं मातम मनाए होते देश के सामने मुआफी मांगा होता, बल्कि एक साल के बाद उन्होंने कहा कि अगर कोई बड़ा बरगद गिरता है, कोई जलजला आता है तो उसके साथ जो लोग जाते हैं उस पर मातम नहीं मनाया जाता है। शर्म की बात है जो लोग हजारों-हजार लोग जिंदा जलाए गए थे इस दिल्ली के चौराहे पर पूरे देश की गलियों में, उनके लिए देश के शासकों के पास कोई एक शब्द नहीं था उनके जले हुए पर मरहम किए होते और उस पंजाब में आज *बड़-बढ़कर लंबी-चौड़ी बात की जा रही है।* मैं राजनीतिक कार्यकर्ता रहा हूं। सत्ता में रहकर मैं सत्ता के बाहर की बात बोलूं तो इस के बारे में माफ कीजिएगा। उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं ईमानदारी से कहना चाहता हूं कि पंजाब जो क्रायसिस आफ फेथ के दौर से गुजर रहा है, नेशनल फ्रंट की सरकार ने उनके दिल और दिमाग में एक विश्वास पैदा करने का काम किया है। मैंने 1974 में अपनी पार्टी से खड़े होकर जमानत जब्त करा ली थी, लेकिन उफ नहीं हुआ। हमारे नेताओं ने और लोगों ने क्या नहीं कहा, मगर उफ नहीं किया। हमें फक्र है कि यदि पंजाब की डोरी को मुख्य धारा में अगर कोई ला सकता है तो हमारी पार्टी, हमारी सरकार ला सकती है। कोई दूसरा नहीं ला सकता है और हम यह करेंगे ...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (डा० बापू कालदाते): उस समय आप दोनों साथ ही थे।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी: 1984 में जो अपरेशन ब्लू स्टार में थे, वह आज आप के नेता बन गए हैं। यह याद रखिए।

श्री सुबोध कांत सहाय: सरकार एक होती है, एक पार्टी होती है, एक नेता होता है और उन की एक नीयत होती है। मैं मानता हूं कि आज हमारे नेता, उनकी नीति और उनकी नीयत, तीनों बहुत साफ हैं। हम चाहते हैं कि पंजाब की समस्या का समाधान हो, इसलिए हम ने तीन तरफा चैनल खोला है। एक तरफ विकास की गति - आज भी पंजाब के खेत लहलहाए हैं। आज भी पंजाब के खेतों में पिछले साल से ज्यादा अनाज पैद

[श्री सुबोध कान्त सहाय]

हुआ है। आज भी वहां के लोग अपनी मेहनत और अपने पसीने से देश को सींचने का काम कर रहे हैं। तो एक तरफ हम ने विकास की गति तेज की है और दूसरी तरफ हमने राजनीतिक माहौल बनाने का रास्ता भी खोल रखा है। उपसभाध्यक्ष महोदय, हम ने चाहे छोटी हो या बड़ी, पंजाब में जो राजनीतिक शक्तियां हैं, जिनकी वहां मर्यादा है, जिनकी वहां पकड़ है, उनके साथ सरकार ने दरवाजा खोलकर उन्हें निमंत्रण दिया है। हम उन से बातें कर रहे हैं। किसी के साथ हमारा कोई दुर्व्यवहार नहीं है, हमारी कोई छुआ-छूत नहीं है। हम जो कह रहे हैं, वह करेंगे।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस के साथ-ही-साथ हम ने जो दिग्भ्रमित लोग हैं। दूसरी सरकार के द्वारा, पाकिस्तान के द्वारा और बाहरी शक्तियों के द्वारा जिन्हें अपने असर में लाने की कोशिश हो रही है, अब या तो वह सुधरेंगे या टूटेंगे। उनके साथ भी हम पूरी फर्मनेस के साथ लड़ने का काम करेंगे। साथ ही, हम ने जो वहां पर ऐडमिनिस्ट्रेटिव मेजर्स लिए हैं, उन मेजर्स के बारे में भी बताना चाहूंगा। हम ने सेंसेटिव एरियाज में इंटेंसिव पेट्रोलिंग की है। हम उस एरिया में कॉम्बिंग आपरेशन कर रहे हैं जहां पर कि लोग पाकिस्तानी शह से घुसकर तोड़-फोड़ का काम कर रहे हैं। हम ने साफिस्टीकेटेड वेपंस लोगों को देने का काम किया है जो पाकिस्तानी हथियारों के साथ मुकाबला कर सकते हैं। हम ने बाबर्ड वायर की फेंसिंग की है 220 किलोमीटर के बार्डर पर। इंडो-पाक बार्डर पर फ्लड लाइट्स लगाए हैं, ऐक्शन वायर फेंसिंग हम ने दूसरे बार्डर की साइड 150-165 किलोमीटर में की है। राजस्थान सेक्टर के बॉर्डर के इलाके में ऐडीशनल फेंसिंग की है 58.8 किलोमीटर में। यह हम ने फरवरी के महीने तक पूरा किया है। उपसभाध्यक्ष महोदय, हम ने पंजाब के सेक्टर का जो बॉर्डर है, उस में 65.49 किलोमीटर में फेंसिंग की है। हम ने कम्प्लीशन ऑफ वर्क में 466 ओ॰पी॰ टावर लगाए हैं। 552 टावर्स दूसरे साइड में लगाए हैं और सितम्बर, 90 तक पूरा करने का टार्गेट है।

हम लोगों ने पंजाब-जम्मू सैक्टर में 44 बोर्ड लगाए हैं और 511 विलेज प्रोटेक्शन फोर्स पिकेट बनाए हैं, विलेज वालन्टियर पिकेट फोर्स बनाए हैं जो 2425 गांवों को कवर करते हैं। पब्लिक ग्रीवेन्सिज के बारे में कहा जा रहा था, पब्लिक ग्रीवेन्सिज की जो मशीनरी है, उनको हमने स्ट्रीम लाइन किया है। यही नहीं विकास के काम में जो पंजाब का एनुअल प्लान आउट ले 7 सौ करोड़ रुपए का था, उसे 9 सौ करोड़ रुपए का किया है। यही नहीं हम लोगों ने बेरोजगारों के लिए 29.49 लाख मैन डेज़ एम्प्लायमैंट के क्रिएट किए हैं जिससे कि गांव के बेरोजगार नौजवानों को काम मिल पाएगा। हमने 75 हजार बेनिफिशीरीज़ को एम्प्लायमेंट देने के लिए वहां पर विभिन्न तरह की स्कीमें चलाई हैं। जो 1990-91 में पूरी होंगी जिससे कि 63 हजार नौजवानों को रोजगार जो सैल्फ एम्प्लायमेंट के तहत काम करेंगे। यही नहीं, उपसभाध्यक्ष महोदय, 1 करोड़ 86 लाख रुपया वैलफेयर, जो शैडयूल्ड कास्ट के लोगों के लिए पंजाब में विशेष तौर पर किया जा रहा है। एक हजार रुपया हम लोगों ने ऐसे लोगों को देना शुरू किया है जो भी लोग रजिस्टर्ड हुए हैं, बेरोजगार में उनको। हमने स्पैशल कोर्ट सैट-अप किया है जो 1984 रायट्स के केसिज़ को देखकर के उसको जल्दी एक्सपीडाइट करेगा। हम लोगों ने केस विदड्रा किए हैं, 1 हजार 617 लोगों पर, जो आर्मी डिजर्टर थे और 412 ऐसे लोग थे जिनमें से 50 लोगों को एम्प्लायमेंट दिया गया है पंजाब गवर्नमेंट की तरफ से और 347 लोगों को सेंट्रल आरगेनाइज़ेशन में लगाया गया है। हमने उन लोगों को, जो आर्मी डिजर्टर थे, रिहेबिलिटेट करने का काम किया है। एक्सग्रेशिया पैमेंट, जो टैरेरिस्ट विक्टिम थे, उनको 20 हजार से लेकर 50 हजार रुपया देने का सरकार ने फैसला लिया है और इसके तहत यह विकास की योजनाएं चल रही हैं। यही नहीं, उपसभाध्यक्ष महोदय, कैश रिलीफ 100 परसेंट जो डिसएबल्ड परसन्स हैं, उनको 50 हजार रुपया दिया जा रहा है, पहले 20 हजार दिया जाता था। सबसिस्टेंस अलाऊंस जो विडोज़ हैं, जो आरफन्स हैं, ऐसे लोगों को 200 से बढ़ाकर 500 किया गया, अब यह 1000 तक कर दिया गया है। मैरिज अलाऊंस 5000 से बढ़ाकर 10000 कर दिया गया है। हमारे पास ऐसी योजना है, जिससे कि हमने कहा कि विकास की गति भी पंजाब में उसी तरह से चल रही है जिस तरह से वहां पर राजनीतिक समाधान की व्यवस्था की जा रही है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जो टैरेरिस्ट अफेक्टिड एम्प्लाइज़ रहे हैं डिस्ट्रिक्ट वाइज़, उन्हें 1000 रुपया प्रति मास दिया जा रहा है और रिजर्वेशन किया गया है उनका 2 परसैंट प्रोफेशनल के लिए, टैक्नीकल और मेडिकल कालेज में 50 परसैंट रिजर्वेशन किया गया है सीलिंग के तहत।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने यही नहीं बल्कि और भी जो विकास की योजनाएं उठाई हैं, उनके बारे में भी मैं आपको बताना चाहता हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: मंत्री महोदय, राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जो ऐडवाइज़री काउंसिल बनाने की बात कही थी वह बनी है या नहीं?

श्री शंकर दयाल सिंह: महोदय, दुख के साथ कहना पड़ता है कि माननीय सदस्य बिहार से आए हैं और बिहार के बारे में कुछ नहीं बोल रहे हैं।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: जब पंजाब के बारे में बात कर रहे हैं तो बिहार कैसे आएगा।

श्री सुबोध कांत सहाय: महोदय, तो मैं कह रहा था कि जो बार्डर एरियाज़ हैं उनमें आइडेंटिफिकेशन कार्ड दिए जा रहे हैं और जो बार्डर एरियाज़ में रहने वाले लोग हैं, जो उस इलाके में रहते हैं उनके यहां अगर कोई विजिटर आता है तो उनकी सारी एक्टिविटीज़ को वाच किया जाता है जिससे कि पाकिस्तान के द्वारा अभी इस वक्त में जो उस इलाके में गुमराह टैररिस्ट्स के नाम से काम कर रहे हैं, हमें जानकारी है कि उनको फोर्स किया जा रहा है कि तुम कुछ ऐक्शन करके दिखाओ तभी तुमको कुछ मदद दी जाएगी। इसलिए इधर जो थोड़ी घटनाएं बढ़ी हैं, मैं चाहता हूं कि सदन उस पर गंभीरता से विचार करे और यही नहीं हम मानते हैं कि पंजाब में जो प्राइम मिनिस्टर साहब ने ऑल पार्टी मीटिंग किया था ....

श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी: ऑल पार्टी नहीं था, चंद पार्टी था .... Janata Party is a national party recognized by the Election Commission.

(Interruptions)...

श्री सुबोध कांत सहाय: तो महोदय, 17 दिसंबर, 1989 को और लुधियाना में 11 जनवरी को दो बार प्रधानमंत्री ने पंजाब का दौरा किया ....

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: हम आपके हर जवाब से संतुष्ट हैं। हमें सिर्फ एक बात का जवाब चाहिए कि राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 14 मार्च को चंडीगढ़ में बी॰के॰यू॰ की मीटिंग ऐड्रस करते हुए कहा था कि मैं पंजाब पर एक ऐडवाइज़री काउंसिल बनाने जा रहा हूं और पीपुल्स ओपिनियन लूंगा और उसकी सिफारिशों से पंजाब में एक पोलिटिकल प्रोसेस शुरू होगा। वह कमेटी बनी है या नहीं बनी? अगर बनी है तो उसके सदस्य कौन हैं....

श्री सुबोध कांत सहाय: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अहलुवालिया जी की इस बात से सहमत हूं कि यह घोषणा की गई थी कि कमेटी बनेगी। कमेटी में कैसे लोगों को रखा जाए, उनकी क्या उपयोगिता है और पंजाब के बारे में उनकी क्या पकड़ है, इन सारी बातों को दृष्टि में रखते हुए उस कमेटी की घोषणा जल्दी ही की जाएगी। चार दिन पहले जब होम मिनिस्टर श्री मुफ्ती साहब पंजाब के लॉ एंड आर्डर की सिचुएशन का ज़ायज़ा लेने के लिए पंजाब गए थे तो मैं भी उनके साथ गया था और हमने उस सिचुएशन को रिव्यू किया है। तो पंजाब में जो भी थोड़ी-बहुत टूटन थी, जो कोआर्डिनेशन का अभाव था, हम लोगों ने उसे पूरी तरह से चुस्त और दुरुस्त करने का काम किया है और उसके साथ ही साथ मैं बहुत ईमानदारी के साथ कहना चाहता हूं कि इस सरकार की निष्ठा और नीयत पर ज़रा भी शक करने की जरूरत नहीं है। हम जल्दी ही वहां चुनाव कराने का काम करेंगे और उस चुनाव में नेता कौन बनेगा, यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है। पंजाब में जो नेता स्वतः उभरकर आएगा, हम उसको गद्दी देने का काम करेंगे। वहां की राजनीति में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि पिछले शासन ने वहां की राजनीति में दिलचस्पी लेकर ही पूरे देश के लिए समस्या खड़ी की थी। इसलिए हम इस हाउस को पूरी तरह से विश्वास दिलाना चाहते हैं कि पंजाब में कौन नेता होगा, उसकी जिम्मेदारी हमारे ऊपर नहीं है। वहां की जनता ही वहां का नेता चुनेगी।

इसके साथ ही मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि इस संकल्प को पास कर दिया जाए।

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया: जब प्रधानमंत्री महोदय को ऐडवाइज़री काउंसिल बनाने में डेढ़ महीना लग रहा है .... **(व्यवधान)**

SHRI V. NARAYANASAMY: We asked whether you have given a direction. What is your reply? No reply has come from the Minister.

(Interruptions)..

उपसभाध्यक्ष (डा॰ बापू कालदाते): उन्होंने कहा है जल्दी से जल्दी ... I shall now put the amendment moved by Shri Subramanian Swamy to vote. The question is:

"That after the said Resolution, th following be added, namely:

[डा॰ बापू कालदाते]

"That the House further resolves that the elections to the Punjab Assembly be held before August 15, 1990."

The motion was negatived.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. BAPU KALDATE): I shall now put the Resolution to vote. The question is:

"That this House approves the continuance in force of the Proclamation issued by the President on the 11th May, 1987, under article 356 of the Constitution, in relation to the State of Punjab, for a further period of six months with effect from the 11th May, 1990."

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. BAPU KALDATE): The House now stands adjourned till eleven O'clock tomorrow.

The House then adjourned at eleven minutes past seven of the clock till eleven of the clock on Friday, the 4th May, 1990.